सरोही जिले के जनजातीय एवं गैर जनजातीय क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक स्थिति एवं शैक्षिक समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन

COMPARATIVE STUDY OF EDUCATIONAL STATUS AND EDUCATIONAL PROBLEMS OF THE STUDENTS OF TRIBAL AND NON TRIBAL AREA OF SIROHI DISTRICT

स्मृता सिंह मीणा,

शोधार्थी पैसिफिक एकेडमी ऑफ हायर एजुकेशन एंड रिसर्च यूनिवर्सिटी,

उदयपुर (राजस्थान)

सार

''यह सत्य ही है कि भारत के भविष्य का निर्माण उसकी कक्षाओं में हो रहा है। भारत की भावी सुरक्षा, कल्याण, समृद्धि एवं सम्पन्नता वास्तव में उन्हीं लोगों पर अवलम्बित है जो हमारे विद्यालयों एवं महाविद्यालयों में अध्ययन कर रहे हैं। किसी समाज या देश का पुनःनिर्माण कर उसको प्रगति एवं उन्नति के पथ पर अग्रसर करने के लिए अति आवश्यक है कि विद्यालय एवं महाविद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास किया जाये।

सृष्टि में जीवन का उत्कर्ष एक अद्‌भुत तथा विलक्षण घटना है। अब तक की जान कारी, अनुमान, वैज्ञानिक परीक्षण एवं शोधो से यह ज्ञात नहीं हो सकता है कि प्रकृति तथा ब्रह्माण्ड की घटनाएँ ऐसे ही क्यों घटित होती हैं? जैसी हमें परिलक्षित होती हैं। मनुष्य अपनी चिन्तन शक्ति, तर्कशक्ति, रूचि व कल्पना के आधार पर ज्ञान–विज्ञान की शाखाएं सृजित करता जा रहा है परन्तु वह ऐसा क्यों कर रहा है? इस क्यों का जवाब शायद वह स्वयं भी नहीं जानता है। मनुष्य को जानकारी केवल यह है हम अपने जीवन की सत्ता को सुरक्षित रखें तथा सृष्टि के नियमों में किसी प्रकार का व्यवधान ना हो। मानव इसे ही अपने जीवन की संतुष्टि,

आवश्यकता तथा अनुभूति मानकर चल रहा है। प्रकृति और मानव की इसी वैचारिक यात्रा के पथ पर अनेक मान्यताओं, विचारधाराओं तथा दार्शनिक अवधारणाओं का जन्म हुआ। दर्शन के सिद्धान्तों का शिक्षा में व्यावहारिक प्रयोग विगत शताब्दी से शुरू हुआ जो ज्ञान की दिशा में मनोविज्ञान का नवीनतम प्रयास है।

आज शिक्षाशास्त्र, समाज विज्ञान तथा मनोविज्ञान में किए जा रहे शोधों का मुख्य विषय मानवीय त्रासदी से जीवन की सुरक्षा हेतु उपायों पर विचार करना रह गया है, क्योंकि विज्ञान चाहे कितने ही दावे करे कि उसने प्रकृति पर विजय प्राप्त कर ली है परन्तु उनके दावे उस समय पलक झपकते ही खोखले नजर आते हैं, जब सुनामी जैसी त्रासदी घटित हो जाती है, उस वक्त मन में विचार उठते हैं कि कहां गया विज्ञान? कहाँ गये वे लोग, जो वैज्ञानिक क्रान्ति का दावा करते हैं व मंगल ग्रह पर मनुष्य जीवन को संभव बताते हैं? अगर ऐसा है तो मानव जीवन को ऐसी त्रासदी से क्यों नहीं बचाया जा सकता? क्यों नहीं एक दिन या 2 दिन या 72 घंटे पहले बता देते कि अमुक घटना घटित होने वाली है। अगर ऐसा संभव नहीं हो सकता तो फिर हम कैसे सोच सकते हैं कि मानव ने प्रकृति पर विजय प्राप्त कर ली है। औपचारिक शिक्षामें यही शोध की बातें विद्यार्थी, शिक्षक, समाज, शिक्षण विधि तथा विषयवस्तु पर केन्द्रित हो जाती है।

शिक्षक अपने छात्रों को शिक्षादेकर उसके भविष्य को सुखद तथा निरपवाद बनाना चाहता है। आज का बालक कल की राष्ट्रीय धरोहर है, उसे सुरक्षित करने के लिए प्रत्येक शिक्षक अपने विद्यार्थी के विकास, उन्नति तथा अभ्युदय की कामना करता है। परन्तु आज का विद्यार्थी कल के लिए किस प्रकार तैयार किया जाये,

यह जटिल प्रश्न सदा से ही कौतूहल का विषय बना रहा है व बना रहेगा। क्यों शिक्षक व अभिभावक चाहते कुछ हैं, विद्यार्थी बनता कुछ और है, ऐसा क्यों? क्योंकि सभी समानताएँ होने के बावजूद भी विद्यार्थी, अभिभावक व शिक्षक के मनोविज्ञान में अन्तर विद्यमान रहता है। भौतिक, शारीरिक एवं जैविकीय दृष्टि से चाहे हमें मर्यादा समान दिखाई देती हो किन्तु हम मनोवैज्ञानिक पक्षों में समानता ढूंढने अथवा एकरूपता लाने में आज भी असमर्थ हैं। इसका कारण वैयक्तिक भिन्नता का होना है, जिस पर व्यक्ति के व्यक्तित्व, कल्पना, तर्क, भावना, उसका आत्मबोध, सामाजिक वर्ग, जीवन संतुष्टि एवं उपलब्धि अभिप्रेरणा सर्वथा एक दूसरे से भिन्न होते हैं।

जीवन संतुष्टि एक व्यक्ति को वह अपने जीवन में किस दिशा में और भविष्य में किस ओर आगे बढ़ने जा रहा है, आदि के बारे में महसूस कराती है और उनका मूल्यांकन करती है। जीवन संतुष्टि एक अच्छी तरह जीवन जीने के लिए किया जा रहा उपाय है। जिसके द्वारा दैनिक जीवन के साथ सामना करने के लिए अन्य लोगों के साथ हासिल लक्ष्यों, आत्म धारणाओं और आत्म कथित क्षमताओं के साथ सम्बन्धों का जीवन संतुष्टि के साथ मूल्यांकन करने की क्षमता होती है। जीवन संतोष अपनी शिक्षा अनुभव और रहने के स्तर के आधार पर आर्थिक स्तर पर खड़े होने की राशि है, जिससे कोई भी सुख समृद्धि पूर्ण अपने जीवन का निर्वाह कर लक्ष्योन्मुख हो सकता ळें

बालक के विकास पर परिवार के वातावरण का पूर्ण प्रभाव पड़ता है। पारिवारिक वातावरण के आधार पर ही बालक के व्यक्तित्व का विकास होता है वंशानुक्रम के

साथ–साथ वातावरण भी बालक के विकास में पूर्ण योगदान देता है। वातावरण का तात्पर्य उन परिस्थितियों से है जिनका बालक के शारीरिक एवं मानसिक विकास पर प्रभाव पड़ता है। वातावरण की सृष्टि उन समस्त परिस्थितियों से होती है जो किसी जीवधारी के 23 चरित्रगत कार्यकलापों को अनुप्रेरित या बोधित करती तथा प्रोत्साहित या निषेचित करती है। इलियट के अनुसार ''चेतन वस्तु की किसी ईकाई के प्रभावशाली उत्तेजक तथा अन्तःक्रिया के क्षेत्र को पर्यावरण कहा जाता है। अतः पर्यावरण एक वाह्य शक्ति है जो सब पर प्रभाव डालती है।'' घर के पर्यावरण के प्रभाव से ही बालक में निहित सभी मूल शक्तियाँ विकसित अथवा कुण्ठित होती हैं। बालक अपने को पर्यावरण के अनुकूल बना कर ही समायोजित कर पाता है। वह परिवार के सदस्यों के व्यवहार, रीतियों उनकी रूचियों, मनोवृत्तियों, सामाजिक परम्पराओं तथा भाषा को सहज ही सीख लेता है और उनका प्रतीक बन जाता है। घर में बालक को अपनी मूल प्रवृत्तियों के प्रदर्शन और उनकी संतुष्टि का पर्याप्त अवसर प्राप्त होता है। घर के आदर्श एवं व्यवस्था, बालक के भावी जीवन को संचालित करते हैं। यदि परिवार का वातावरण अच्छा एवं सहयोगात्मक है और माता–पिता तथा परिवार के अन्य सदस्यों में परस्पर प्रेम, विश्वास तथा सौहार्द की भावना है तो बालक का भावात्मक विकास भी समुचित रूप से होता है। इसके विपरीत प्रतिकूल वातावरण में बालक के मन में भावना ग्रन्थियाँ बन जाती हैं जो उसके व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास में बाधक होती हैं। इसलिये घर में सुव्यवस्था और अनुकूल परिस्थितियों का निर्माण आवश्यक है, जिससे बालक का सुगमता से सर्वांगीण शारीरिक, मानसिक एवं भावात्मक विकास हो सके। पारिवारिक वातावरण केवल शैक्षणिक उपलब्धि को ही नहीं बल्कि यह

मानसिक स्वास्थ्य को भी प्रभावित करता है। परिवार का अच्छा वातावरण बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य को बनाये रखता है और बच्चे अपने जीवन में उचित समायोजन कर पाते हैं वहीं दूसरी तरफ परिवार का खराब वातावरण बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य को नकारात्मक रूप से प्रभावित कऱता है जिससे बच्चे हमेशा चिन्ता, तनाव व अन्तर्द्वन्द्व आदि समस्याओं से ग्रसित हो जाते हैं।

विद्यालय की विभिन्न कक्षाओं में अनेक प्रकार के छात्र शिक्षा ग्रहण करने के लिए आते है। समान मानसिक योग्यताओं से सम्पन्न न होने के कारण वे समय की एक ही अवधि में विभिन्न विषयों और कुशलताओं मे विभिन्न सीमाओं तक प्रगति करते हैं। उनकी इसी प्रगति प्राप्ति या उपलब्धि का मापन या मूल्यांकन करने के लिए उपलब्धि परीक्षाओं की व्यवस्था की गई है। अतः हम कह सकते हैं कि उपलब्धि परीक्षाएं वे परीक्षाएं हैं, जिनकी सहायता से विद्यालय में पढ़ाये जाने वाले विषयों और सिखाई जाने वाली कुशलताओं में छात्रों की सफलता या उपलब्धि का ज्ञान किया जाता है।

किसी भी समाज समुदाय में सर्वांगीण विकास में चाहे वह आर्थिक हो, सामाजिक हो या सांस्कृति हो लेकिन इन सबसे ज्यादा सर्वप्रथम शैक्षिक विकास प्रमुख स्थान रखता है। भारत में सामाजिक एवं धार्मिक सुधारकों ने शिक्षा को महत्वपूर्ण माना था और उन्होनें शिक्षा के उत्थान के लिये कार्य भी किये। उन्होने यह अनुभव किया कि पिछड़ी जातियों एवं जनजातियों का आर्थिक एवं सामाजिक उत्थान केवल शैक्षणिक सुधार द्वारा ही संभव है।

शिक्षा के स्तर के आधार पर ही किसी समाज की सामाजिक एवं सांस्कृतिक

प्रगति का अनुमान लगाया जा सकता है क्योंकि शिक्षा का संस्कृति के साथ अभूतपूर्व संबंध होता है। इसलिये विशेषकर आदिवासी क्षेत्रों में शिक्षा के प्रति व्यापक दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता है। शिक्षा वह प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति एवं उसके वातारण के बीच परस्पर सम्बन्ध पाया जाता है। व्यक्तित्व के प्रत्येक पहलू पर वातावरण का व्यापक प्रभाव पड़ता है और वह इन सबसे निर्देशित होता है। अतः शिक्षा संस्कृति पर निर्भर है और संस्कृति शिक्षा से संबंधित है।

आदिवासी नाम उन लोगों को दिया जाता है जो पहले से ही इन क्षेत्रों में बसे हुए थे। इनके पिछड़े हुए होने का प्रमुख कारण आदिवासी शिक्षा का स्तर अन्य जातियों से निम्नतम स्तर पर होना है।

जनजाति के लोग आर्थिक क्षेत्र में पराश्रित, शिक्षा के क्षेत्र में पिछड़े हुए और सामाजिक दृष्टि से सर्वाधिक कष्टभोगी, अलगाव व अस्पृश्यता के शिकार रहे है जहां तक आदिवासियों का संबंध है उनके सबसे बड़ी समस्या या कठिनाई अलगांव है जिसके फसलस्वरूप इनमें शिक्षा का अभाव है।

भारत में जनता की उन्नति के लिये अनेक विविध उपक्रम का अमल करने के बावजूद भी जनजातिय एवं गैर जनजातिय वर्ग के लोगों की आर्थिक एवं सामाजिक शैक्षिक परिस्थिति संतोषजनक नहीं है। समाज का यह बड़ा शिक्षा से वंचित न रह जाये। उन्हें शिक्षित करना, उन्हें आत्मनिर्भर बनाना आज की आवश्यकता बन गई है।

उनके रहन–सहन और तौर–तरीके से पता लगता है कि वे लोग आज भी समाज में कितने पीछे है। इन वर्गो में शिक्षा प्रमाण औसम से कम है। इसका प्रमुख कारण कुपोषण, आर्थिक दरिद्रता काम की अयोग्य आदतें, केलापन, आत्मविश्वास का

प्रभाव उच्च वर्ग के लोग तथा छात्रों के साथ समायोजन की समस्या आदि है। आजादी के बाद प्रथम एवं द्वितीय पंचवर्षीय योजनाओं में कुछ विशेष प्रावधान रखकर उनकी उन्नति की कोशिश की गई। छात्रों की शिक्षा के संदर्भ में मुख्य समस्या उनकी बोली व भाषा है क्योंकि पाठशाला में मानक भाषा का उपयोग होता है छात्रों को अपनी मातृभाषा के अलावा अन्य भाषा को सीखना पड़ता है। इसलिय विद्यार्थी पाठशाला में आने से अप्रसन्न होते है।